Item Code: 641 Participant Code: 317

नया जन्म

क्या भूल पाऊँगी वो दिन ?
क्या याद रहेंगे नये दिन ?
जीने का मतलब,
क्या जान पाऊँगी तब ।

हर सवाल का जवाब होगा,
क्या हर जवाब का कोयी अर्थ होगा ?
आज जो खोया मैंने है,
क्या वो कभी वापस ना पाऊँगी मैं ?

क्या भूल पाऊँगी वो दिन ?
क्या याद रहेंगे नये दिन ?
लगता है डर सबसे,
उस दुरुह दिन के तबसे ।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 641 Participant Code: 317

अब तो सूरज भी आगसी है,
पानी भी सेलाब जैसी है,
क्या मैं जियू हर पल ?
नही तो क्या मैं मरू हर पल ?

क्या भूल पाऊँगी वो दिन ?
क्या याद रहेंगे नये दिन ?
क्या करू मैं एक नयी शुरुवात ?
बिना कहे किसी से कोयी बात ।

स्त्री करती स्वीकार,
अलग अलग रूप उस प्रकार,
जो हो कठिन,
और हो कभि हसीन ।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

क्या भूल पाऊँगी वो दिन ?
क्या याद रहेंगे वो नये दिन ?
कर रही हूँ इंतज़ार उस नये दिन का,
जो मुझे भरे फिरसे खुशियों से ज़रा।

क्या हर नये पल बसंत की तरह होगी ?
जो बस आखिर सूखे पत्ते छोड़ेगी।
थोड़ी देर की खुशी केलिए अब,
क्या मुझे जीना है सारी ज़िंदगी दुख में अब।

क्या भूल पाऊँगी वो दिन ?
क्या याद रहेंगे वो नये दिन ?
तू तो कहती थी ना माँ की,
बनायेगी अपनी गुड़ियाँ को दुलहन।

क्या नही आयेगा तेरे घर किसी शत,
हसीन और खुशनसी एक प्रभात।
क्या मैं कॉफी हूँ तेरे लिए?
क्या छोड़दोगी तुम वो इच्छा मेरे लिए?

क्या भूल पाऊँगी वो दिन?
क्या याद रहेंगे वो नये दिन?
क्या कोयी आयेगा जो मेरी सफेद-काली,
ज़िंदगी को बनाये रंगबिरी जैसे हो होली?

अब जीना है मुझे एक नयी ज़िंदगी।
देखना है एक नयी उषा अबकी।
क्या ले पाऊँगी नया मोड़ ज़िंदगी में,
शायद आज जानू जीना कैसे है मुझे।

क्या भूल पाऊँगी वो दिन ?
क्या याद रहेंगे नये दिन ?
नयी दिषा,
क्या लेके देगी मुझे एक नयी उषा ?

नया पड़ाव है तो क्या ?
ना छोड़ सकूँगी वो जो अीद है नया,
सारी यादें जब तोड़ेंगे मुझे,
क्या नये यादें जोड़ेंगे मुझे ?